जब गंगा-सरस्वती में विवाद हुआ

भारत में बहने वाली गंगा और सरस्वती नदियां वास्तव में स्वर्ग की देवीयां हैं। जो परसपर एक-दूसरी के शाप के कारण वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुईं। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु की तीन पत्नियां लक्ष्मी, गंगा और सरस्वती थीं। एक बार लीला स्वरूप विष्णु जी ने गंगा जी के प्रति विशेष अनुराग प्रदर्शित किया। फलस्वरूप सरस्वती के मन में ईर्ष्या भाव उत्पन्न हो गया। इस पर उन्होंने भगवान विष्णु जी को खरी-खोटी सुनाईं, जिस पर विष्णु भगवान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। जब सरस्वती ने गंगा जी को भी दुर्वचन कहने शुरू किए, तो भगवान उठकर प्रासन्द से बाहर चले गए। इस पर सरस्वती का क्रोध और भी भड़क उठा। उन्होंने गंगा के केश पकड़ लिए। लक्ष्मी जी पास में बैठीं अब तक शांत थीं। जब उन्होंने बीच में आकर दोनों को शांत करने का प्रयास किया, तो सरस्वती ने लक्ष्मी को भी गंगा की सहायिका मानकर उनका अपमान कर दिया तथा वृक्ष रूप हो जाने का शाप दे दिया। इधर, गंगा जी ने निरापराध लक्ष्मी को दंडित होते देख सरस्वती को भूतल पर जाकर नदी हो जाने का शाप दे दिया। सरस्वती भी कहां पीछे रहने वाली थीं। उन्होंने क्रोध से गंगा जी को शाप दिया कि वह भी भूतल पर मृतक प्राणियों की अस्थियां ढोने वाली नदी के रूप में प्रवाहित हों। गंगा तथा सरस्वती का विवाद काफी समय तक चलता रहा। कुछ समय पाकर भगवान विष्णु अपने पार्षदों सहित लौटे, तो पत्नियों की कलह और शाप का विवरण हुआ। विष्णु जी ने लक्ष्मी को शांत वृति, सहनशीलता और उदारता की प्रशंसा की तथा उन्हें सब में श्रेष्ठ बताया। भगवान विष्णु ने केवल लक्ष्मी को ही पत्नी रूप में अपने पास रखना उचित समझा। गंगा तथा सरस्वती के मर्यादा उल्लंघन करने के कारण विष्णु जी ने उनका त्याग करने का निर्णय लिया। वियोग की आवश्य मानी स्थिति से व्यथित होकर दोनों ही कातर स्वरों में शापों को शीघ्र निपटाने का उपाय पूछने लगीं।

सपने बताएँ आपकी जिंदगी

आधुनिक विज्ञान का यह मानना है कि मनुष्य अपनी अधूरी इच्छाओं को अपने सपनों में पूरा करता है जबकि ज्योतिष-शास्त्र का यह कहना है कि सपने मनुष्य को भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं। जिस प्रकार पशु-पक्षी बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं को पहले से ही भाँप जाते हैं ठीक वैसे ही मनुष्य द्वारा रात्रि के अंतिम पहर में देखे गए स्वप्न भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं। बस जरूरत है उन सपनों को ठीक ढंग से समझने की।

- स्वप्न में किसी स्त्री को बाल धोते हुए अथवा संवारते हुए देखना शीघ्र ही किसी तीर्थ स्थल की यात्रा का सूचक होता है। लेकिन स्वयं कंघी करना शरीर में किसी चोट की सूचना देता है।
- स्वप्न में किसी सुंदर स्त्री या पुरुष को देखना ठीक नहीं माना गया है जबकि बदसूरत या किसी अपंग व्यक्ति को देखना, रुके हुए कार्य में सफलता का सूचक होता है।
- किसी की शवयात्रा अथवा श्मशान में अंत्येष्टि क्रिया को देखना, परिवार में जल्दी ही मांगलिक कार्यों तथा आर्थिक लाभ का परिचायक है।
- मनुष्य अगर स्वप्न में वर्जिश करता हुआ दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही किसी रोग का शिकार हो जाता है।
- सपने में अगर आप खुद को आकाश में विचरण करते हुए दिखाई दें तो परिवार में किसी सदस्य की मानहानि की सूचना देता है। लेकिन खुद का धरती पर घूमना शीघ्र ही रोजगार प्राप्ति में सहायक होता है।
- स्वप्न में ज्योतिषी के पास जाना अथवा ज्योतिष से संबंधित कोई भी कार्य करना संतान को किसी-न-किसी रूप में कष्ट में डालता है।
- नींद में स्वयं को झाड़ू लगाते हुए देखना धन हानि या चोरी की सूचना देता है।
- स्वप्न में स्वयं को बारिश में भीगते हुए देखना हर तरह की व्याधि और संकट से मुक्ति का संकेत देता है।
- स्वप्न में बैंड या शहनाई का बजते हुए देखना दु:खद स्थितियों के आगमन का संकेत देता है।
- नींद में रोटी का खाना स्वयं के बीमार पड़ने का संकेत देता है, वहीं गरीब लोगों को रोटी का बाँटना आर्थिक स्थिति में वृद्धि करता है।
- सोते हुए विवाह का सेहरा पहनते हुए देखना पारिवारिक और विवाहित जीवन में अलगाव तथा झगड़े का संकेत देता है।
- आईने में अपना अक्स देखना अचल धन-संपत्ति प्राप्ति का संकेत देता है।
- स्वयं को स्वप्न में जूते-चप्पलों से पिटते हुए देखना शीघ्र ही व्यक्ति के मान-सम्मान में वृद्धि करता है। लेकिन किसी दूसरे को जूते से पीटना धन हानि और मान हानि की ओर संकेत करते हैं।

जब भगवान सूर्य का जन्म हुआ

सत्ताधिकार के लिए देवताओं और असुरों में शत्रुता थी। इसी बात को लेकर एक बार दैत्यों और देवताओं में भयानक युद्ध हुआ। यह संघर्ष अनेक वर्षों तक चलता रहा। युद्ध में असुर देवताओं पर भारी पड़ने लगे। वे पराजित हो गए। वन-वन भटकने लगे। देवताओं की स्थिति अत्यन्न दयनीय हो गई। उनकी ऐसी दुदर्शा देख कर उनके पिता महर्षि कश्यप और माता अदिति दुखी रहने लगे।

एक बार देवर्षि नारद घूमते-घूमते कश्यप जी के आश्रम की ओर आ निकले। वहां अदिति और महर्षि कश्यप को व्याकुल देख कर उन्होंने उनसे उनकी चिंता का कारण पूछा। अदिति बोली-देवर्षि! दैत्यों ने युद्ध में देवताओं को पराजित कर दिया है। इन्द्रादि देवगण भटक रहे हैं। हमें उनकी रक्षा करने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा। नारद जी बोले- माते। इस संकट से बचने का केवल एक उपाय है। आप उपासना करके भगवान सूर्य को प्रसन्न करें। उनसे पुत्र रूप में प्रकट होने का वरदान प्राप्त करें। केवल भगवान सूर्य नारायण के तेज के समक्ष ही दैत्य पराजित हो सकते हैं और देवताओं की रक्षा हो सकती है। अदिति सूर्य नारायण की तपस्या करने लगी। अदिति को तप करते अनेक वर्ष बीत गए। भगवान सूर्य नारायण ने अदिति की तपस्या भंग करने के लिए प्रयास किए पर वह तपस्या में लीन रही। अंत प्रसन्न होकर सूर्यदेव प्रकट हुए व बोले- हे देवि। मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। मनवांछित वरदान मांगों। अदिति बोली- सूर्यदेव। मेरी केवल यह विनती है कि आप मेरे पुत्र के रूप में उत्पन्न होकर देवताओं की रक्षा करें। अदिति की बात कर सूर्यदेव बोले- तथास्तु देवि ऐसा ही होगा। अदिति का वरदान देकर सूर्यदेव अंतरध्यान हो गए।

एक बार महर्षि कश्यप और अदिति कुटिया में बैठे थे। तभी किसी बात पर क्रोधित होकर कश्यप ने अदिति के गर्भस्थ शिशु के लिए मृत शब्द का प्रयोग कर दिया। कश्यप ने जैसे ही मृत शब्द का उच्चारण किया। तभी अदिति के शरीर से दिव्य प्रकाश पुंज निकला। उस प्रकाश पुंज को देखकर कश्यप मुनि भयभीत हो गए और सूर्य देव से अपने अपराध की क्षमा मांगने लगे। तभी एक दिव्य आकाश्वाणी हुई। 'मुनिवर! मैं तुम्हारे अपराध को क्षमा करता हूं। मेरी आशा से एक दिव्य बालक जन्म लेगा। जो तुम्हारी सभी इच्छाओं को पूर्ण करने के पश्चात ब्रह्माण्ड के मध्य में स्थित हो जाएगा।'

महर्षि कश्यप और अदिति ने वेद मंत्रों द्वारा प्रकाश पुंज की स्तुति आरंभ की। उचित समय आने पर उसमें से एक तेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ। उसके शरीर से दिव्य तेज निकल रहा था। यही बालक 'आदित्य' और 'मार्तण्ड' आदि नामों से प्रसिद्ध हुआ।

आदित्य वन-वन जाकर देवताओं को एकत्रित करने लगे। आदित्य के तेजस्वी और बलशाली स्वरूप को देख कर इन्द्रादि देवता उत्साहित हो गए तथा उन्होंने संगठित होकर, दैत्यों पर आक्रमण कर दिया।

आदित्य को देव सेना का सेनापति बनाया गया। आदित्य को देव सेना का सेनापति बनाया गया। आदित्य के तेज और बल के आगे दैत्य अधिक समय तक टिक नहीं सके। शीघ्र ही उनके पांव उखड़ गए। वे अपने प्राण बचा कर पाताल भाग गए। सूर्यदेव के आशीर्वाद से देवताओं का स्वर्ग पर पुन: अधिकार हो गया। सभी देवताओं ने आदित्य को जगत पालक के रूप में स्वीकार कर लिया तथा आदित्य ब्रह्माण्ड के मध्य में स्थित होकर ब्रह्माण्ड का कार्य संचालन करने लगे।

मानसिक शांति पाने के लिए....

मनुष्य को धन-धान्य, यश, सम्पत्ति आदि प्राप्त हो जाएं पर मानसिक शांति प्राप्त न हो तो वह सब वैभव उसके लिए कष्टप्रद हो जाते हैं। अत: चित्त शांति के लिए निम्नलिखित प्रयोग करें।

प्रतिदिन प्रात:काल स्नान करके शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर पवित्र आसन पर उत्तर की तरफ मुख करके बैठें। सामने एक पट्टे पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर ऊंकार का एक चित्र विराजमान करें। यह परमात्मा का एक परम शान्तिदायक प्रतीक है, ऐसी भावना करें।

प्रतीक के सामने गाय के घी का दीपक और धूपबत्ती जलाकर दीपक को अपने बाएं हाथ की ओर तथा धूपबत्ती को अपने दाहिने हाथ की ओर रखें।

इसके पश्चात दोनों हाथ जोड़कर मस्तक को झुकाकर 'ऊँ नम: सिद्धेभ्य:,ऊँ नम: सिद्धेभ्य:,ऊँ नम: सिद्धेभ्य:' बोलते हुए प्रणाम करें।

इसके पश्चात आगे लिखाहुआ श्लोक बोलकर मंगल भावना करें।

सर्वे वै सुखिनःसंतु, सर्वेसंतु निरामयाः।

सर्वे भद्राणिपश्यंतु मा कश्चिद धुःखभाग् भवेत।।

सभी सुखी हों, सभी रोगरहित बनें, सभी कल्याणमय वस्तुओं को देखें तथा कोई भी दुखी न हों। इसके बाद 'ऊँ शांति ऊँ' इस मंत्र की दस माला का जप करें. यह माला सूत की अथवा स्फटिक की होनी चाहिए तथा

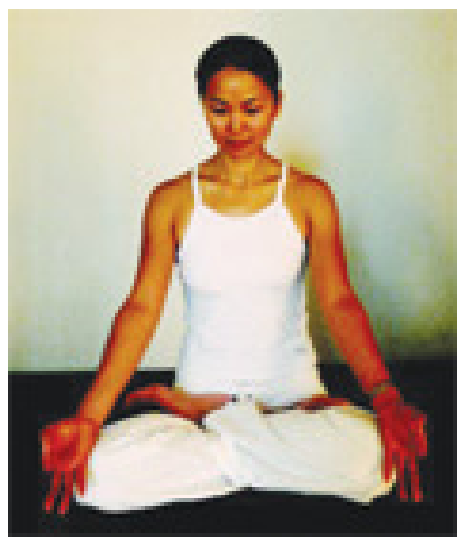

उसका संस्कार भी कर लेना चाहिए। रात को सोने से पहले 'ऊँ नम: सिद्धेभ्य:,ऊँ नम: सिद्धेभ्य:, ऊँ नम: सिद्धेभ्य:' मंत्र बोलकर तीन बार भगवान को नमस्कार करें। इस प्रकार प्रयोग करने से मानव को मानसिक शांति प्राप्त होती है एवं कई प्रकार की परेशानियां भी कम होती हैं। इस उपाय से आप मानसिक शांति का अनुभव करने लगेंगे.यह क्षणिक नहीं बल्कि स्थायी होगी.

पौधे, जो लाते हैं घर में सुख-समृद्धि

हरियाली फेंगशुई के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाती है। फेंगशुई के अनुसार स्वस्थ और सुंदर पौधे आपके घर में खुशियां लाते हैं और घर के हर कोने को उत्साह और उमंग से सरोबार कर देते हैं।

फेंगशुई में पौधों को नौ आधारभूत सुरक्षा सावधानियों में से एक माना गया है। इसलिए घर के खाली हिस्सों में पौधे लगा देना चाहिए।

कैसे पौधे लगाएं?

- चढने वाली बेलें जिन्हें क्लाइमबर्स कहा जाता है जैसे- मनी प्लांट को कोने में लगाकर उस जगह की उदासीनता को कम किया जा सकता है।
- घर के दक्षिण-पूर्व कोने को धन और समृद्धि का कोना माना जाता है, इसलिए यहां चौड़े पत्तियों वाले पौधे लगाना चाहिए।
- मुरझाए हुए या सूख गए पौधों को तुरंत हटा देना चाहिए। इससे नकारात्मक ऊर्जा फैलती है।
- घर के सामने वाले हिस्से में कांटेदार या नुकीले पत्तों वाले पौधे नहीं लगाना चाहिए। वे नकारात्मक ऊर्जा को सहयोग करते हैं।

इन छोटी-छोटी बातों पर अमल करके आप प्राकृतिक हरियाली और सुख का अनुभव कर सकते हैं। सिर्फ पेड़-पौधों हमारे वातावरण को शुद्ध करने में सहायक हैं।

बारिश कराने में भी सिर्फ पेड़-पौधों की ही महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अत: हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधों को लगाकर हरियाली बढ़ानी चाहिए।

घर में बांसुरी रखने के 8 फायदे

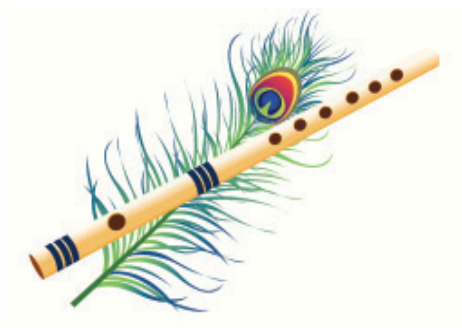

* आप नहीं जानते होंगे, बांसुरी को घर में रखने के ये 8 फायदे...

बांसुरी भगवान श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय है। बांसुरी कृष्णजी को प्रिय होने के कारण उसको पकृति का अनुपम वरदान है। वास्तु और फेंगशुई के अनुसार बांसुरी को अगर घर, दुकान में रखा जाए है तो इसके कई लाभ मिलते हैं। आइए जानें...

* ज्योतिष के अनुसार बांसुरी का इस्तेमाल अगर सोच समझकर किया जाए तो यह हमें कई प्रकार के दोषों से बचाती है।
* बांसुरी के संबंध में एक धार्मिक मान्यता है कि जब बांसुरी को हाथ में लेकर हिलाया जाता है तो बुरी आत्माएं दूर हो जाती हैं।
* और जब बांसुरी को बजाया जाता है तो ऐसी मान्यता है कि घरों में शुभ चुम्बकीय प्रवाह का प्रवेश होता है।
* फेंगशुई विद्या के अनुसार बांसुरी घर में रखना बहुत शुभ माना गया है। यह उन्नति और प्रगति दोनों देने में बहुत सहायक है। इस प्रकार बांसुरी प्रकृति का एक अनुपम वरदान है।
* यदि सोच-समझकर इसका उपयोग किया जाए तो दोषों का बिना किसी तोड़-फोड़ के निवारण कर अशुभ फलों से बचा जा सकता है।
* बांसुरी बांस से बनी होती है तथा इसके पौधे को दिव्य माना जाता है। अत: घर में बांसुरी का प्रयोग करके कई तरह से लाभ उठाया जा सकता है।
* ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति अपनी नौकरी से परेशान रहता हैं, बांसुरी उसकी सारी मुश्किलें आसान कर सकता है।
* ज्यो व्यक्ति काफी मेहनत के बाद भी अपने बिजनेस में सफलता हासिल नहीं कर पाते उनके लिए बांस से बनी यह बांसुरी उन्नति और समृद्धि दोनों देने में सक्षम है। अत: उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का पूजन करते हुए अपने दुकान की छत पर दो बांसुरी चिपकानी चाहिए या टांग देनी चाहिए।

जाने क्या है शिव के अर्द्धनारीश्वर रूप का सत्य

सृष्टि में नर और नारी की समानता का प्रतीक है भगवान शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप। जानें उसके पीछे की कहानी।

ब्रह्मा की समस्या

कहते हैं जब सृष्टि की संरचना के बाद ब्रह्मा जी ने मनुष्य का निर्माण किया तो उन्हें समझ आया कि ये तो एक शीघ्र अंत होने वाली रचना है क्योंकि उन्होंने सिर्फ पुरुष बनाये। सृष्टि को चलाने के लिए संतति की आवश्यकता है और उसके लिए स्त्री की, पर वो है ही नहीं। तब अपनी समस्या के समाधान के लिए वो शिव की शरण में पहुंचे और कठोर तप किया। ब्रह्मा की कठोर तपस्या से शिव प्रसन्न हुए और उनकी समस्या के हल के फल में उन्होंने अपना अर्धनारीश्वर स्वरूप प्रगट किया। इस रूप में वे आधे शिव थे और आधे शिवा। इस तरह उन्होंने मानव को प्रजनन शील बनने क प्रेणना देकर सृजन का संदेश दिया।

स्त्री पुरुष समानता

इसके साथ ही उन्होंने अपने इस रूप से पुरूष और स्त्री की समानता के महत्व का भी उपदेश दिया। उन्होंने बताया कि स्त्री और पुरुष दोनों पकृति का अभिन्न अंग हैं और एक के बिना भी इसका विकास संभव नहीं है। अर्धनरनारीश्वर की आराधना का अर्थ है शिव अर्थात पुरुष और स्त्री यानि शक्ति का एका होना।

क्या है शिव और शक्ति का संबंध

शक्ति शिव की अभिभाज्य अंग हैं, यदि शिव नर के प्रतीक हैं तो शक्ति नारी की। वे एक दुसरे के पूरक हैं। शिव के बिना शक्ति का अथवा शक्ति के बिना शिव का कोई अस्तित्व नहीं है। शिव अकर्ता हैं, यानि वे संकल्प मात्र करते हैं, संकल्प सिद्धी शक्ति ही करती हैं। अगर शिव कारण हैं तो शक्ति कारक हैं, शक्ति जागृत अवस्था हैं जबकि शिव सुशुप्तावस्था। शक्ति मस्तिष्क हैं और शिव हृदय हैं।

रत्न पहनने पर भी लाभ क्यों नहीं?

अपनी ग्रह बाधाओं को दूर करने एवं ऐच्छिक कार्यों की सफलता के लिए मनुष्य रत्नों को धारण प्राचीन काल से ही करता आया है। आज जो मनुष्य एक या दो रत्नों को धारण किए हुए रहते हैं, फिर भी उन्हें दुखी देखा गया है, वे अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करते रहते हैं। ऐसा क्यों?

शायद आप सोचेगें कि रत्न प्रभावशाली नहीं है या ज्योतिषी पंडित आदि ने गलत बताया है। ऐसा नहीं है, ऐसा तो इसलिए होता है कि या तो वे नकली रत्न धारण किए होते हैं या रत्न दोष पूर्ण होते हैं अथवा विधिवत धारण किए हुए नहीं होते हैं। यह भी हो सकता है कि उन्होंने अपने ग्रह से संबंधित सही रत्न को धारण न किया हो।

यह ठीक है कि आप ज्योतिषियों के बताए अनुसार विधिपूर्वक शुभ दिन या मुहूर्त में रत्न धारण करते हैं, परन्तु किसी-किसी की आदत होती है कि अपनी उंगली से अंगूठी निकाल कर दूसरी उंगली में डाल लेना या मेज पर निकाल कर नचाना। इससे उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है, क्योंकि उंगली से निकालकर पुन: पहनने के कारण ज्योतिषी के द्वारा बताया गया मुहूर्त और दिन बदल जाता है। इसी प्रकार किसी को दिखाने के लिए अपनी उंगली से बार-बार अंगूठी निकालना भी अनुचित है।

रत्न धारण करते समय कुछ सावधानियां रखी जाएं तो निश्चित रूप से लाभ होगा:

धारण किए जाने वाले रत्न के स्वामी ग्रह और लग्नेश में मित्रता हो, द्वितीय और सप्तम भाव के स्वामी अपनी महादशा या अंतर्दशा में मारकेश के रूप में कार्य करते हैं। ये भारी देह कष्ट उत्पन्न कर सकते हैं, इसलिए जहां तक संभव हो इनके रत्न न धारण करें बल्कि इन ग्रहों को पूजा और दान आदि से शांति करें। शत्रु ग्रहों के रत्न एक साथ धारण न करें जैसे माणिक्य के साथ हीरा, नीलम व गोमेद निषिद्ध हैं क्योंकि सूर्य और शनि परस्पर शत्रु हैं।

मोती के साथ गोमेद नहीं धारण करना चाहिए। मूंगा के साथ हीरा, नीलम, व गोमेद न पहनें, पन्ना को मोती के साथ में न पहनें। बृहस्पति और राहु आपस में शत्रु हैं, अत: पुखराज के साथ गोमेद और हीरा धारण नहीं करना चाहिए। हीरा के साथ माणिक्य, मूंगा, व पुखराज नहीं पहनें। नीलम के साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज धारण नहीं करना चाहिए। गोमेद और माणिक्य, मोती व मूंगा साथ न पहनें। लहसुनिया के साथ ऐसा कोई निषेध नहीं है।

रत्न धारण करते समय संबंधित ग्रह के मंत्र का जप 108 बार करना चाहिए एवं शुभ दिन को धारण करना चाहिए जैसे- माणिक्य रविवार को धारण करना चाहिए। साथ में ऊं घृणि सूर्याय नाम: मंत्र का जाप करना चाहिए। माणिक्य स्वर्ण में जड़वाना चाहिए। मोती चांदी में पहनें। मूंगा ताम्बे में ऊं अं अंगारकाय नम: मंत्र के साथ मंगलवार को धारण करना चाहिए। पन्ना स्वर्ण व चांदी में ऊं बुं बुधाय नम: मंत्र के साथ बुधवार को पहनना चाहिए। पुखराज स्वर्ण में बृहस्पतिवार को ऊं बृं बृहस्पतये नम: मंत्र के साथ पहनें। हीरा स्वर्ण, चांदी या प्लेटिनम में ऊं शुं शुक्राय नम: मंत्र जाप कर शुक्रवार को धारण करना चाहिए।

नीलम लोहा या पंच धातु में शनिवार को ऊं शुं शनैश्चराय नम: के साथ पहनें। गोमेद अष्टधातु या चांदी में जुड़वाकर शुक्रवार या शनिवार को ऊं रां राहुवे नम: मंत्र जप कर धारण करें। लहसुनिया चांदी में ऊं कें केतवे नम: मंत्र के साथ बुधवार या शनिवार को धारण करना चाहिए।

रत्न जड़ी अंगूठी को धारण करने से पूर्व उसे शुद्ध करने के लिए कम से कम 24 घंटे तक कच्चे दूध या गंगा जल में डुबो कर रखें। अंगूठी धारण करने का शुभ समय सूर्योदय से एक घंटे तक होता है परन्तु बुधवार के अतिरिक्त शेष दिनों में एक घंटे तक होता है परन्तु बुधवार के अतिरिक्त शेष दिनों में दोपहर में अभिजित मुहूर्त भी शुभ माना गया है।

धूप, दीप, अगरबत्ती जला कर उस ग्रह की उपासना करके पूर्व की ओर मुंह करके अंगूठी पहननी चाहिए। स्नानादि द्वारा स्वच्छ एवं पवित्र होकर रत्न धारण करना चाहिए। बीमारी की स्थिति में रत्न नहीं धारण करें। इस प्रकार उक्त सावधानियों को ध्यान में रख कर रत्न धारण किया गया हो तो इच्छित लाभ प्राप्ति में संशय नहीं रहता।